क्या

बाईबल

ईश्वरीय संदेश है ?

ईश्वरीय ज्ञान के लिए एक प्रमुख आवश्यकता है कि वह ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में हो ताकि सृष्टि के सभी व्यक्ति उससे लाभान्वित हों और कोई भी उससे वंचित न रहे।

अब इस आधार पर बाइबिल को देखें।

(अ) बाइबिल के आधार पर सृष्टि को बने अभी तक कुल लगभग ६ हजार वर्ष ही हुए है। हालांकि बाइबिल में यह स्पष्ट रूप से नहीं लिखा है कि सृष्टि की रचना ईसा पूर्व ४००० वर्ष में हुई, पर पुरानी बाइबिलों की पाद टिप्पणियों में यह ईसा पूर्व ४००० वर्ष का सन्दर्भ रहता था जो प्रायः अब नहीं दिया जाता, पर कुछ बाइबिलों में यह सन्दर्भ अब भी मिल जाता है।

दि ओपन बाइबिल के पुराने नियम के पृष्ठ ९६६ व नये नियम के प्रारम्भ पृष्ठ ९६७ के बीच दिये गये-बाइबिल के दृष्टिक्षेप परिचय के पृष्ठ २ व ४ पर बताया गया है कि आदम (बाइबिल के अनुसार सृष्टि का प्रथम पुरुष) ईसा से ४००० वर्ष पूर्व हुआ था। और ईसा के पश्चात अभी तक २०११ वर्ष, अर्थात् सृष्टि की कुल आयु अनुमानतः ६००० वर्ष।

(आ) अब बाइबिल के सन्दर्भों से काल गणना–

बाइबिल में परमेश्वर के द्वारा आदम के बनाने के पश्चात की बीस पीढ़ियों का विवरण-प्रथम पुत्र के जन्म के समय पिता की आयु का विवरण ठीक से दिया हुआ है जो निम्नानुसार है–

नाम	पुत्र जन्म के समय आयु वर्ष	बाइबिल सन्दर्भ
१. आदम	१३०	उत्पति ५:३
२. शेत[१]	१०५	उत्पति ५:६
३. एनोश	९०	उत्पति ५:९
४. केनन	७०	उत्पति ५:१२
५. महल्लेल	६५	उत्पति ५:१५
६. यारद	१६२	उत्पति ५:१८
७. हनोक	६५	उत्पति ५:२१
८. मथूशलह	१८७	उत्पति ५:२५
९. लामेक	१८२	उत्पति ५:२८
१०. नूह	५००	उत्पति ५:३२
११. शेम	१००	उत्पति ११:१०
१२. अर्पक्षद	३५	उत्पति ११:१२
१३. शेलह	३०	उत्पति ११:१४
१४. एबर	३४	उत्पति ११:१६
१५. पेलग	३०	उत्पति ११:१८
१६. रउ	३२	उत्पति ११:२०
१७. सरूग	३०	उत्पति ११:२२
१८. नाहोर	२९	उत्पति ११:२४
१९. तेरह	७०	उत्पति ११:२६
२०. अब्राहम		
(अ) यिश्माएल/ इस्माइल (८६ अब्राहम की आयु)		उत्पति १६:१६
(आ) इसहाक	१०० अब्राहम की आयु	
२१. इसहाक	६०	उत्पति २१:५
२२. याकूब	२१०६	उत्पति २५:२६

यद्यपि अब्राहम का पहला पुत्र इस्माइल। अब्राहम की ८६ वर्ष की उम्र में, उसकी पत्नी की दासी हाजिरा से हुआ था।

(उत्पति १६:१,१५,१६)

१. यद्यपि आदम के शेत के पूर्व काइन और हाबिल पुत्र हो चुके थे पर आदम की वंश परम्परा आगे शेत से ही दी गई है। इसलिये हमने यहां शेत का उल्लेख करना ही उचित समझा।

यहूदी व ईसाई अपनी परम्परा जबकि अब्राहम के दूसरे पुत्र इसहाक जो उसकी पत्नी से पैदा हुआ था, से मानते हैं, अतः उपरोक्त गणना सूची में इसहाक का नाम दिया है व वर्ष संख्या उसी से गिनी है। मुस्लिम अपनी परम्परा इस्माइल से मानते हैं।

प्रभु परमेश्वर द्वारा बाइबिल में आदम की उत्पति से याकूब के पैदा होने तक उपरोक्तानुसार २१०६ वर्ष हो चुके थे।

याकूब से ईसा मसीह की माता मरियम के पति यूसूफ तक (दोनों सहित) कुल ५४ पीढ़ियां थीं। (लूका ३:२३-३१, जो इसी पुस्तिका के पृष्ठ–पर दी गई है) आदम से याकूब तक की उपरोक्त सूची में क्रम १२ के अर्पक्षद से क्रम १८ के नाहोर तक की सात पीढ़ियों में प्रथम पुत्र की उत्पति के समय पिता की आयु २९ से ३५ वर्ष के बीच थी। यदि सामान्य रूप से प्रथम पुत्र के जन्म के समय पिता की आयु ३० वर्ष मान ली जाय तो याकूब से युसूफ तक की ५४ पीढ़ियों की कुल अवधि ५४x३०=१६२० वर्ष होगी। इस प्रकार आदम से ईसा के जन्म तक २१०६+१६२०=३७२६ वर्ष होंगे। मोटे तौर पर अनुमानतः ४००० वर्ष जो बाइबिल की टिप्पणियों में दिये गये हैं।

इसके पश्चात ईसा के सामान्य रूप से मान्य जन्म समय से अब तक २०११ वर्ष हुए हैं अतः आदम की उत्पति से अभी-सन् २०११ की समाप्ति तक-कुल वर्ष होंगे-२१०६+१६२०+२०११=५७३७ मात्र और बाइबिल के अनुसार परमेश्वर ने आदम की रचना सृष्टि निर्माण के छठे दिन की। अतः बाइबिल के अनुसार सृष्टि की कुल आयु ५७३७ वर्ष या मोटे तौर पर ६००० वर्ष ही होगी जो आजकल की वैज्ञानिक खोजों के आधार पर पूर्णतः गलत है।

इसके विपरीत वैदिक धर्म सृष्टि और मानव की उत्पति लगभग दो अरब वर्ष पूर्व मानता है। कृष्ण लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व हुए। उनके देहावसान के कुछ वर्षों पश्चात ही कलियुग का प्रारम्भ हुआ और अभी कलियुग संवत् ५११३ (सन् २०११ ई० में) चल रहा है, जो सामान्य पंचांगों में उपलब्ध है। राम, कृष्ण के भी पूर्व हुए थे। वैज्ञानिक सृष्टि की आयु अरबों वर्ष मानते हैं।

बाइबिल के अनुसार सृष्टि की आयु अनुमानतः ६००० वर्ष है पर इसमें भी ईश्वरीय सन्देश, आदेश, या सार्वजनिक व्यवस्था हेतु निर्देश जो कुछ भी कह लें-सृष्टि के निर्माण के साथ, ६००० वर्ष पूर्व नहीं दिए गए।

बाइबिल के अनुसार यद्यपि परमेश्वर का आदम से और बाद में नूह-दसवीं पीढ़ी से, अब्राहम-बीसवीं पीढ़ी से और याकूब-बाईसवीं पीढ़ी से समय-समय पर कुछ वार्तालाप होता था पर वह व्यक्तिगत विषयों से सम्बन्धित था। सार्वजनिक व्यवस्था सम्बन्धी आदेश, तो प्रभु परमेश्वर ने केवल मूसा को दिये।

याकूब का जन्म सृष्टि के २१०६वें वर्ष में हुआ, यह उपरोक्त सूची से स्पष्ट है। याकूब अपनी १३७ वर्ष की आयु में मिस्र में गये,

(उत्पत्ति ४७:८,९)

मिस्र में इस्राएली कुल ४३० वर्ष रहे।

(निर्गमन १२:४०)

इस्राएली लोग मिस्र देश से बाहर निकलने के ठीक तीन महीने पश्चात सीनय के निर्जन प्रदेश में आए और मूसा परमेश्वर के पास पहाड़ पर गए।

(निर्गमन १९:१,३)

और यहीं पर प्रभु परमेश्वर ने, अपनी बहु-प्रचारित दस आज्ञायें मूसा को दी।

(निर्गमन २०:१-१७)

इसके अतिरिक्त भी अगले ४० वर्ष तक जब तक इस्राएली भटकते रहे, प्रभु की आज्ञायें मिलती रहीं और–

"जो बातें इस्राएली समाज से कहने की आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थीं, उसके अनुसार मूसा ने वे बातें उनसे चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहले दिन कहीं"

(व्यवस्था विवरण १:३)

इस प्रकार सार्वजनिक व्यवस्था के आदेश, प्रभु परमेश्वर के वचन, सृष्टि प्रारम्भ के २१०६+१३७+४३०+४० कुल २७१३ वर्ष पश्चात ही, प्रभु के प्रिय एवं चुने हुए इस्राएली समाज तक पहुंचे। और इन २७१३ वर्षों में, अनेकानेक व्यक्ति प्रभु के सन्देश से वंचित होकर ही इस दुनिया से चले गये।

वे न केवल प्रभु परमेश्वर के सन्देश से वंचित रहे, पर इससे भी भारी परेशानी यह है कि उनमें से अनेक, जो इस्राएली समाज के मान्य व्यक्ति रहे हैं, वे परमेश्वर के बाद के आदेश के विरुद्ध कार्य करके मृत्यु को प्राप्त हो गये।

उदाहरण प्रस्तुत हैं:-

१) **बहिनों के साथ सम्बन्ध–**

"काइन (*आदम का प्रथम पुत्र*) ने अपनी पत्नी के साथ सहवास किया। वह गर्भवती हुई और उसने हनोक को जन्म दिया।"

उत्पत्ति ४:१७

"जब शेत (*आदम का पुत्र*) एक सौ पांच वर्ष का हुआ, तब उसने एनोश को उत्पन्न किया।

उत्पत्ति ५:६

अब प्रश्न है कि उस समय पूरे विश्व में मनुष्यों का केवल एक ही परिवार आदम और हव्वा का ही था, तो फिर काइन और शेत को पत्नियां कहां से मिलीं। अन्य कोई परिवार तो था नहीं। अतः वे आदम और हव्वा की पुत्रियां, अर्थात् काइन व शेत की बहिनें ही थीं। जिनके साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बाद में प्रभु परमेश्वर ने मना किया है-

"तुम अपने पिता अथवा माता से उत्पन्न पुत्री के साथ, चाहे उनका जन्म घर में अथवा बाहर हुआ हो, अपनी बहिन के साथ संभोग मत करना।

लेवी १८:९

पिता अथवा माता के अलग-अलग लिखने, व "घर में अथवा बाहर से तात्पर्य यह है कि सौतेली बहिनों से भी सम्बन्ध न किया जाय। पर काइन व शेत को तो अपनी सगी बहिनों से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ा।

बाइबिल का परमेश्वर यदि वैदिक व्यवस्था के अनुसार कार्य करता तो इस परेशानी से बच सकते थे। वैदिक मान्यता के अनुसार परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में अनेक युवा स्त्री-पुरुष उत्पन्न किए और फिर उनसे संसार का क्रम चला।

२. **पिता पुत्री का सम्बन्ध–**

"दोनों पुत्रियों ने उस रात अपने पिता को मदिरा पिलाई और बड़ी पुत्री जाकर उसके साथ लेट गई।...."

उन्होंने उस रात भी अपने पिता को शराब पिलाई और

छोटी पुत्री जाकर उसके साथ लेट गई...''
इस प्रकार लूत की दोनों पुत्रियां अपने पिता से गर्भवती हुईं।

उत्पति १९:३३,३५,३६

जबकि इस सम्बन्ध के विरुद्ध आदेश है कि–

''यदि तुमने किसी स्त्री से संभोग किया है तो उसकी पुत्री से संभोग नहीं करना। वे तुम्हारी निकट कुटुम्बी स्त्रियां हैं। यह लम्पटता है।''

लेवी १८:१७

हालांकि यह गलत कार्य लूत ने शराब के नशे में किया व मुख्य दोषी तो लड़कियां हैं, जिन्होंने सम्बन्ध बनाने के उद्देश्य से पिता को शराब पिलाई। पर लूत भी तो शराब पीने का दोषी है जिसके लिये बाद के समय में बाइबिल में मनाही है।

''शराब, शराबी को उपहास का पात्र बनाती है। मदिरा उससे हल्ला गुल्ला करवाती है, जो मनुष्य उसके रास्ते पर चलता है, वह बुद्धिमान नहीं है।''

नीति वचन २०:१

काश ये आदेश पहले दिए होते, लूत का परिवार बुराई से बचता।

३. **बहिनों से विवाह–**

''किन्तु सन्ध्या समय वह अपनी पुत्री लिआ को लेकर याकूब के पास आया। याकूब ने उसके साथ रात व्यतीत की (*उसके साथ सहवास किया*)।

याकूब ने ऐसा ही किया। इसके पश्चात लाबान ने अपनी पुत्री राहेल का विवाह उससे कर दिया।

याकूब राहेल के पास भी गया। पर उसने लिआ से अधिक राहेल से प्रेम किया।

उत्पति २९:२३,२८,३०

पर बाद में परमेश्वर ने इस प्रकार के विवाह के विरुद्ध आदेश दे दिया।

> **"तुम अपनी स्त्री की बहिन को अपना कर सौत न बनाना और उसकी बहिन के जीवित रहते उससे संभोग मत करना।"**

लेवी १८:१८

काश यह आदेश पहले ही दिया जाता तो याकूब न केवल इस पाप से बच जाते, वरन् शायद यहूदी व ईसाई परम्परा का इतिहास ही बदल जाता। कारण यह वही याकूब है जिसका बाद में परमेश्वर ने नाम बदलकर इस्राएल रखा था। और जिसके बारह पुत्रों से यहूदी व ईसाई अपनी परम्परा मानते हैं। ईसा मसीह भी अपने को इन बारह पुत्रों के परिवार का ही मानते थे।

४. पुत्रवधू से सम्बन्ध–

> **"जब यहूदा ने तामार को देखा...उसने तामार से कहा, 'मुझे अपने साथ सहवास करने दो।' यहूदा नहीं जानता था कि वह उसकी बहू है।....यहूदा ने ये वस्तुयें उसे दे दीं, और उसके साथ सहवास किया तामार उससे गर्भवती हुई।"**

उत्पति ३८:१५,१६,१८

पर इस घटना के कई वर्षों बाद परमेश्वर का आदेश आया–

> **"तुम अपनी पुत्रवधु से संभोग मत करना। वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है। तुम उसका अनादर नहीं करना।**

लेवी १८:१५

हालांकि यहूदा नहीं जानता था कि वह महिला उसकी पुत्रवधू है, पर परमेश्वर की व्यवस्था पहले ही आ गई होती तो तामार भी शायद इस पाप से उसे रोक देती।

इस यहूदा के वंशजों ने ही, अपने भाइयों के कुल से अलग होकर, राज्य का हिस्सा किया और इसी के नाम से इस्राएल के वंशज अपने को यहूदी कहते हैं।

यहूदा और पुत्रवधु तामार के इस सम्बन्ध से जुड़वां बच्चे 'पेरस' और 'जेरह' हुए।

(उत्पत्ति ३८:२७-३०)

इसी पेरस की वंश परम्परा में आगे सुलेमान (सालोमन) और दाउद (डेविड) जैसे–बाइबिल के विशिष्ट राजा हुए। दाउद को तो मुस्लिम मान्यता के अनुसार अल्लाह (प्रभु परमेश्वर) की ओर से 'जबूर*' (भजन संहिता-अंग्रेजी में 'साम') के रूप में ईश्वरीय ज्ञान-'किताब' मिली।

इसी वंश में आगे युसुफ हुए जो यीशु की माता मरियम के पति थे। ईसा की इसी दाउद के 'शारीरिक रूप से बीज से बनाये' जाने के कारण उसे सिंहासन पर बिठाने की बात कही गई है।

इस प्रकार सृष्टि की आयु यद्यपि करोड़ों वर्षों की है, पर थोड़ी देर के लिये, यदि सृष्टि की आयु बाइबिल के अनुसार ६००० वर्ष की ही मान ली जाय, तो भी बाइबिल के परमेश्वर ने, अपना निर्देश, या व्यवस्था, सृष्टि निर्माण के तत्काल पश्चात आदम को नहीं दिए। उसके निर्देश २७१३ वर्ष के बाद आये। इससे इतने वर्षों की मानव जाति न केवल परमात्मा के सन्देश से वंचित रही, वरन् बाद के आदेशों के विरुद्ध कार्य करके पाप की भागी भी बनी। दोषी कौन? निश्चित रूप से परमेश्वर जिसने दिशा-निर्देश देने में इतने वर्ष लगा दिए।

इस प्रकार की दुविधापूर्ण स्थिति न हो इसके लिये यह आवश्यक है कि ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में ही दे दिया जाय। और बाइबिल ईश्वरीय ज्ञान की इस कसौटी पर खरी नहीं उतरती।

❑❑❑

---

*पुराना नियम अर्थात् old testament कुछ खुदायी पुस्तकों का संग्रह है, उन्हीं में से एक पुस्तक 'जबूर' भी है। जिसकी मूल भाषा हिब्रू है, यह विक्रयार्थ हमारे प्रकाशन में मौजूद है, जिसमें मूल हिब्रू व उसका हिन्दी अनुवाद मौजूद है।